Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 5.146
Volume - 5, Issue - 6, JUNE - 2022 Publication Date: 30/06/2022

DOIs:10.2018/SS/202206009 --:-- Research Article

भारतीय ग्रामीण समाज में महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति

डॉ. शिवराम सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र, डी.एस.एम. डिग्री कॉलेज
काँठ, मुरादाबाद - **244501**
Email ID : shivrambanasthali@gmail

शोध सार : भारत गाँवों का देश है, जहाँ पर देश की 70 प्रतिशत के लगभग जनसंख्या निवास करती है। गाँवों में महिलाओं के कंधों पर घर एवं कृषि का अधिकांश भार होता है। ग्रामीण महिलाओं की भूमिका बहुआयामी है, गृहणी के रुप में घर सम्भालती है, ईंधन इकट्ठा करती है, भोजन बनाती है। खेतों में, उद्योगों में परिवार के भरण - पोषण के लिए मजदूरी करती है। स्नेह, प्रेम एवं मार्गदर्शन देकर मानव विकास में सहायता प्रदान करती हैं एक पढ़ी लिखी महिला पूरे परिवार को साक्षर करने की कोशिश करती हैं।

मुख्य बिंदु : जनसंख्या, भूमिका, मजदूरी, साक्षरता ।

1. प्रस्तावना :

किसी भी देश एवं समाज में महिला की सामाजिक स्थिति समाज के स्तर की सूचक होती है। प्राचीन भारत में महिलाओं की स्थिति अच्छी कही जा सकती है, क्योंकि वे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में स्वतंत्रतापूर्वक भाग लेती थी। पुरुषों के समान शिक्षा प्राप्त करती थीं लड़कों कि तरह लड़कियों का भी यज्ञोपवीत संस्कार होता था। वेदों के अध्ययन के साथ-साथ वह नृत्य-संगीत में दक्षता रखती थी जैसे - घोषा, अपाला, गार्गी, शकुन्तलाए, सीता सावित्री आदि। इन्हें विदुषी के रुप में स्वीकार किया जाता था।

धार्मिक कार्यों में पति-पत्नी का साथ होना आवश्यक माना जाता है। शिक्षा एवं धार्मिक समानता के साथ परिवार का कोई भी कार्य स्त्रियों की सहमति एवं सहभागिता के बिना नहीं हो सकता था। प्राचीन समय में स्त्री की पारिवारिक स्थिति उच्च एवं सम्माननीय थी।

उत्तर वैदिक काल से स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आनी शुरु हो जाती है। महर्षि मनु ने नारी को जन्म से लेकर मृत्यु तक पिता, पति, और पुत्र पर निर्भर कर दिया। उसके स्वयं के अस्तिव की कोई पहचान नहीं रहीं महिलाएँ। सामाजिक और धार्मिक रुप से संकीर्ण विचारधारा की शिकार हो गयी।

मध्यकाल में मुसलमान आक्रमणकारियों के आगमन के पश्चात भारतीय नारी की स्थिति में और भी अधिक गिरावट आनी शुरू हो गयी। इसी समय में पर्दा-प्रथा, बाल-विवाह, बालिका-दाह, सती-प्रथा एवं जौहर जैसी कुप्रथाओं का प्रचलन हुआ। स्त्री को भोग-विलास का साधन माना जाने लगा। समाज में लड़की के जन्म पर शोक मनाया जाने लगा। स्त्री कुप्रथा शुरु हो गयी। कुछ क्षेत्रों में तो पुत्रियों को जन्म के पश्चात मारा जाने लगा।

18वीं सदी के उत्तरार्द्ध से अंग्रेजों के आगमन से भारत की शिक्षा व्यवस्था में सुधार आना शुरू हुआ। अंग्रेजी शिक्षा से युवा पीढ़ी के विचारों से नई दिशा मिलनी शुरू हुई। महिलाओं से जुड़ी कुप्रथाओं की समाप्ति एवं महिला कल्याण के लिए राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, दयानन्द सरस्वती, महादेव गोविन्द रानाडे, महात्मा गाँधी जैसे समाज सुधारकों ने अपने-अपने स्तर पर अनेक सराहनीय कार्य किये। समाज सुधाराकों ने स्त्री शिक्षा का प्रचार, बाल विवाह निषेध, सती प्रथा समाप्ति, विधवा पुनर्विवाह, जैसे क्षेत्रों में कार्य किया। महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक अधिकार प्रदान करवाने के प्रयास किये। आज महिला देश या समाज का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ न पहुँची हो। आज महिला स्वयं अपनी पहचान बना रही है साथ ही पुरुष को कामयाब बनाने में भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से भूमिका निभा रही है। शिवाजी को छत्रपति सम्राट बनाने में उनकी माँ जीजा बाई का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

अधिक श्रम शक्ति के बाद भी आज की ग्रामीण महिला अपने अस्तित्व की पहचान नहीं बना पा रही हैं। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में साहूकारों, महाजनों, ठेकेदारों द्वारा महिलाओं का आर्थिक, सामाजिक शोषण किया जा रहा जा रहा है। निरक्षरता के कारण महिलाओं को विभिन्न प्रकार की यातनाएँ सहनी पड़ रही है और उन्हें अनेकों समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

2. साहित्य का पुनर्वालोकन :

तिवारी श्रद्धा (2022) द्वारा लघु शोध में ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति में समस्याओं का अध्ययन किया गया है। अध्ययन में पाया गया कि महिलाओं की समाज में स्थिति बेहतर नहीं है। ठेकेदारों एवं भूमाफियों द्वारा महिला श्रमिकों का आर्थिक शोषण किया जा रहा है। अशिक्षा क्या जागरुकता में कमी इनके विकास में प्रमुख बाधा है।

श्रीवास्तव, रमेश (2002) द्वारा महिलाओं की सामाजिक आर्थिक विकास में राजनितिक विषय पर प्रस्तुत शोध पत्र में राजनीतिक इच्छाशक्ति का अभाव एवं राजनीतिक भ्रष्टाचार को महिला उत्थान उत्थान में प्रमुख बाधा माना है। सामाजिक उन्नति के लिए आर्थिक उन्नति आवश्यक है।

पंत, नवीन (1994) में अपने लेख ग्राम विकास में महिलाओं की भूमिका में बताया है कि भारतीय महिलाऐं गृह कार्य के साथ-साथ कृषि कार्य में भी संलग्न है। इसके साथ ही शासकीय और अशासकीय कल-कारखानों को कार्य करते देखा जा सकता है। ग्राम पंचायत में ये भी आरक्षण प्राप्त हो गया है। जिससे महिलाऐं आत्मबल से आर्थिक क्षेत्र में अपना जौहर दिखा सकेगी।

लॉरेन्स, जारिमन (2010) अपने प्रस्तुत अध्ययन महिला श्रमिक : सामाजिक स्थिति एवं समस्या में महिलाओं की सामाजिक एवं का प्रयास किया है।

यादव रविप्रकाश, रणिनी दीप, पूजा राय (2010) ने अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर महिला श्रमिकों की स्थिति एवं लिंग आधारित भेदभाव जैसी महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत चर्चा प्रस्तुत की है।

3. अध्ययन क्षेत्र :

अध्ययन क्षेत्र के रुप में उ.प्र. के जनपद सीतापुर - तहसील सिधौली के ग्राम पंचायत रामपुर कलाँ को लिया गया है। जो सिधौली सं. 23 किमी. की दूरी पर है। रामपुर कलाँ में कुल परिवार 704 हैं, जिसकी जनसंख्या 3875 है, जिसमें 2121 पुरुष और 1745 महिलाएं हैं। इनकी कुल महिला जनसंख्या में से 175 महिलाओं का चयन अपने अध्ययन कार्य के लिए किया गया।

4. अध्ययन का उद्देश्य :

प्रस्तुत पेपर में मेरा उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति को देखना है। आजादी के 75 वर्ष बाद भी उनकी स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ है। ग्रामीण समाज में प्रचलित कुप्रथाएँ आज भी महिलाओं के जीवन को प्रभावित करती है।

महिलाओं द्वारा समाज में प्रचलित कुप्रथाओं का किस प्रकार समर्थन या विरोध किया जाता है। महिलाओं के स्वास्थ्य स्तर एवं समाज में उनकी स्थिति को जानने का प्रयास किया जायेगा।

5. शोध पद्धति :

प्रस्तुत अध्ययन में अन्वेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया। इसके लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से आंकड़े प्राप्त किए गये। प्राथमिक के लिए साक्षात्कार एवं अनुसूची पद्धति का प्रयोग किया गया जबकि द्वितीयक के लिए पूर्व अध्ययन, पत्र-पत्रिकाएँ, सरपंच द्वारा दी गई जानकारी का उपयोग किया गया। अध्ययन प्राप्त आंकड़ों को विभिन्न सारणियों से स्पष्ट किया गया है।

सारणी क्रमांक - 1
आयु सम्बन्धी विवरण

क्र.सं.	आयु	महिलाओं की संख्या	प्रतिशत
1	18 - 27	35	20%
2.	28 - 37	56	32%
3.	38 - 47	21	12%
4.	48 - 57	35	20%
5.	58 - 67	28	16%
		175	**100%**

उपरोक्त सारणी से प्राप्त आँकड़ों से ज्ञान होता है कि कुल **100** प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं में से **20** प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे है, जो **18** से **27** वर्ष के आयु वर्ग में आती है तथा **32** प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे है जो **28** से **37** वर्ष के आयु में आती है, जबकि **20** प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे है, जो **48** से **57** वर्ष के आयु वर्ग में आते हैं तथा **16** प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे है जो कि **58** से **67** वर्ष के आयु वर्ग में आते है।

इससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाता **28** से **37** वर्ष के है जिनका प्रतिशत **32** है।

सारणी क्रमांक - 2
शिक्षा का स्तर संबंधी विवरण

क्र. सं.	शिक्षा का स्तर	महिलाओं की स्थिति	प्रतिशत
1.	निरक्षर	70	40%
2.	मात्र साक्षर	35	20%
3.	प्राथमिक	17	10%
4.	माध्यमिक	35	20%
5.	हायर सैकण्डरी	18	10%
		175	**100%**

शिक्षा के स्तर का अवलोकन करने पर उक्त सारणी द्वारा स्पष्ट होता है कि महिला **100** प्रतिशत उत्तरदाताओं में से **40** प्रतिशत निरक्षर है जबकि **20** प्रतिशत उत्तरदाता मात्र साक्षर है **10** प्रतिशत उत्तरदाताओं ने प्राथमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त की है। **20** प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माध्यमिक स्तर तर की शिक्षा प्राप्त की है एवं **18** प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हायर सेकेण्डरी स्तर तर शिक्षा प्राप्त की है।

इससे स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक संख्या **40** प्रतिशत उत्तरदाताओं की है वे किसी भी स्तर तक कि शिक्षा प्राप्त नहीं की है।

सारणी क्रमांक - 3
वैवाहिक स्थिति संबंधी विवरण

क्र.सं.	आयु	महिलाओं की संख्या	प्रतिशत
1.	विवाहित	119	68%
2.	अविवाहित	7	4%
3.	विधवा	35	20%
4.	तलाक शुदा	14	8%
		175	**100%**

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि कुल **100** प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं में से **68** प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित है**,** जबकि **4** प्रतिशत उत्तरदाता अविवाहित है एवं **20** प्रतिशत उत्तरदाता विधवा है तथा प्रतिशत उत्तरदाता तलाक शुदा है।

इससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश **68** प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित है।

सारणी क्रमांक - **4**
परिवार की प्रकृति संबंधी विवरण

क्र.सं.	परिवार की प्रकृति	महिलाओं की जाति	प्रतिशत
1.	संयुक्त	130	74%
2.	एकल	45	26%
		175	**100%**

परिवार की प्रकृति के विषय में सारणी द्वारा स्पष्ट होता है कि कुल **100** प्रतिशत उत्तरदाताओं में से **74** प्रतिशत उत्तरदाता संयुक्त परिवार में तथा **26** प्रतिशत उत्तरदाता एकल परिवार में निवास करते हैं।

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता संयुक्त परिवार में निवास करते हैं।

सारणी क्रमांक - **5**
व्यवसाय संबंधी विवरण

क्र.सं.	व्यवसाय	महिलाओं की संख्या	प्रतिशत
1.	मजदूरी	70	40%
2.	शासकीय, नौकरी	17	10%
3.	कृषि	70	40%
4.	व्यापार	18	10%
		175	**100%**

व्यवसाय के विषय में सारणी के अवलोकन से निम्न तथ्य स्पष्ट होता है कि कुल **100** प्रतिशत उत्तरदाताओं में **40** प्रतिशत उत्तरदाता मजदूरी कार्य में संलग्न है। **10** प्रतिशत उत्तरदाता शासकीय नौकरी में कार्यरत है तथा **40** प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्य में संलग्न है जबकि **10** प्रतिशत उत्तरदाता व्यापार करते है।

इससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाता मजदूरी करके अपने परिवार का भरण-पोषण करते हैं केवल **10** प्रतिशत उत्तरदाता ही नौकरी में कार्यरत है।

सारणी क्रमांक - **6**
परिवार में स्त्रियों की स्थिति संबंधी विवरण

क्र.सं.	**परिवार में स्त्रियों की स्थिति**	**महिलाओं की संख्या**	**प्रतिशत**
1.	पूर्णतः पुरुषों के अधीन	140	80%
2.	पुरुषों के समान	35	20%
3.	पुरुषों से अधिक स्वतंत्र	-	00%
		175	**100%**

परिवार में स्त्रियों की स्थिति के विषय में सारणी द्वारा ज्ञात होता है कि कुल **100** प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में से **80** प्रतिशत उत्तरदाताओं के है। परिवार में स्त्रियां पूर्णतया पुरुषों के अधीन है, जबकि **20** प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में स्त्रियों को पुरुषों के समान स्थान प्राप्त है।

इससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश **80** प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में स्त्रियाँ पूर्णतया पुरुषों के अधीन है।

सारणी क्रमांक - 7
महिलाओं के राय को महत्व दिये जाने संबंधी विवरण

क्र.सं.	**परिवार में महिलाओं की राय**	**महिलाओं की संख्या**	**प्रतिशत**
1.	हाँ	77	44%
2.	नहीं	84	48%
3.	थोड़ा बहुत	14	08%
		175	**100%**

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि कुल **100** प्रतिशत महिलाओं उत्तरदाताओं में से **44** प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में किसी निर्णय के संबंध में समर्थन देते है, **48** प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में निर्णय मे संबंध में उनकी राय बिल्कुल भी महत्व नहीं किया जाता है तथा **8** प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में निर्णय के संबंध में उनकी राय को थोड़ा बहुत महत्व दिया जाता है।

इससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश **48** प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में किसी निर्णय के संबंध में महिलाओं की राय महत्व नहीं दिया जाता है।

सारणी क्रमांक - 8
स्वास्थ्य संबंधी विवरण

क्र.सं.	**स्वास्थ्य समस्या**	**महिलाओं की संख्या**	**प्रतिशत**
1.	सर एवं कमर दर्द	105	60%
2.	पांव में सूजन	21	12%
3.	उल्टी दस्त	28	16%
4.	सर्दी बुखार	21	12%
		175	**100%**

स्वास्थ्य संबंधी विवरण से ज्ञात होता है कि कुल **100** प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं में से **60** प्रतिशत उत्तरदाता सर एवं कमर दर्द से पीड़ित है तथा **12** प्रतिशत उत्तरदाता पांव में सूजन से पीड़ित हैं एवं **16** प्रतिशत उत्तरदाता उल्टी दस्त रोग से पीड़ित है जबकि **12** प्रतिशत उत्तरदाता सर्दी बुखार रोग से पीड़ित हैं।

अतः स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाता सर एवं कमर दर्द से पीड़ित है।

सारणी क्रमांक - 9
सामाजिक कुप्रथाओं के पक्ष संबंधी विवरण

क्र.सं.	सामाजिक कुप्रथाओं	महिलाओं की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	73	42%
2.	नहीं	84	48%
3.	थोड़ा बहुत	18	10%
		175	**100%**

उपरोक्त सारणी के अवलोकन स्पष्ट है कि कुल **100** प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं में से **42** प्रतिशत उत्तरदाता ग्रामीण समाज में प्रचलित कुप्रथाएँ जैसे दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह, बहु विवाह आदि का समर्थन करती है तथा **48** प्रतिशत उत्तरदाता इन कुप्रथाओं का विरोध करती है, जबकि **10** प्रतिशत उत्तरदाता इन सामाजिक कुप्रथाओं का थोड़ा बहुत समर्थन करते हैं।

इससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाता ग्रामीण समाज में प्रचलित कुप्रथाओं का समर्थन करती है।

सारणी क्रमांक - 10
शासन द्वारा संचालित महिला कल्याण योजनाएं व अधिकारों के जानकारी संबंधी विवरण

क्र.सं.	शासन द्वारा संचालित महिला कल्याण योजनाएँ व अधिकार	महिलाओं की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	52	30%
2.	नहीं	123	70%
		175	**100%**

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि कुल **100** प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं में से केवल **30** प्रतिशत उत्तरदाताओं को ही शासन द्वारा संचालित महिला कल्याण योजनाओं के संबंध में जानकारी है जबकि अधिकांशतया **70** प्रतिशत उत्तरदाता शासन द्वारा संचालित महिला कल्याण योजनाओं एवं अधिकारों की जानकारी से अनभिज्ञ है।

इससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश **70** प्रतिशत उत्तरदाता को शासन द्वारा संचालित महिला कल्याण कार्यक्रमों एवं अधिकारों की जानकारी नहीं है।

6. निष्कर्ष :

संकलिक समंकों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण समाज में आज भी महिलाओं की स्थिति पुरुषों की स्थिति की तुलना में निम्न है नारी शिक्षा का अभाव है। ठेकेदारी एवं बडे भू-मालिकों द्वारा महिला श्रमिकों का आर्थिक शोषण किया जा रहा है। सामाजिक कुप्रथाओं का बोलबाला है। कुपोषण एवं लगातार गर्भधारण के कारण उनके स्वास्थ्य का स्तर निम्न है। अशिक्षा एवं जागरुकता की कमी के कारण परिवार नियोजन महिला कल्याण कार्यक्रमों एवं अधिकारों से अनभिज्ञ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. शर्मा, राजेन्द्र कुमार (1996) : ग्रामीण समाजशास्त्र एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिसट्रीब्यूटर्स.
2. इन्द्र, एम. ए. (1995) : प्राचीन भारत में स्त्रियों की स्थिति, मोतीलाल पब्लिशर्स, बनारस.
3. लॉरेन्स, जास्मिन (2010) - महिला श्रमिक सामाजिक स्थिति एवं समस्याएं अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली.
4. यादव, रवि प्रकाश, दीप रागिनी, राय पूजा (2010) भारत में महिला श्रमिक, एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लि. दिल्ली.
5. प्रसाद, गोविन्द (2007) : महिला एवं बाल श्रमिक (सामाजिक समस्याएं, समाधान एवं भावी दृष्टिकोण डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
6. राष्ट्रीय समिति की रिपोर्ट का सार संक्षेप (1971-74) भारत में महिलाओं की स्थिति, अलाईड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ज्योति प्रिंटिंग वर्क्स, जामा मस्जिद, दिल्ली
7. कपूर, प्रमिला (1973) : भारत में विवाह और कामकाजी महिलाएँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.